सिंधु घाटी सभ्यता की वास्तुकला एवं नगर तथा भवनों की विशेषताएं

भाग:-2

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

प्राचीन इतिहास विभाग
SNSRKS College Sa

सिंधु सभ्यता की उत्कृष्ट नगर योजना

सैन्धव सभ्यता के नगर उच्च कोटि की नगर योजना का उदाहरण प्रस्तुत करते है. हड़प्पा सभ्यता के नगरों की खुदाई में पूर्व तथा पश्चिम में दो टीले मिलते है. पूर्वी टीले पर नगर तथा पश्चिमी टीले पर दुर्ग स्थित था. इनका निर्माण एक सुनिश्चित योजना के आधार पर हुआ प्रतीत होता है.

जहां एक ओर दुर्ग में कोष्ठगार, सभा, जलाशय , द्वार, बुर्ज, राजमार्ग (मुख्य सड़क), प्रासाद आदि उन्नत वास्तु कला के सभी तत्व प्राप्त होते है. वहीं निचले शहर का निर्माण भी सुनिश्चित योजना के आधार पर किया गया था. विद्वानों का मानना है की निचले नगर में भी नियोजित विकास एवं साफ़-सफाई की उतनी ही व्यवस्था थी जैसी की दुर्ग के भीतर था.

शायद नगर की रक्षा के लिए दुर्ग का निर्माण किया गया होगा. दुर्ग के चारों ओर एक सुरक्षा दीवार बनी है, जिसमें स्थान-स्थान पर द्वार तथा उसके समीप रक्षक गृह बने हुए है.

सिंधु सभ्यता की उत्कृष्ट नगर योजना की विशेषताएँ

सिंधु सभ्यता की उत्कृष्ट नगर योजना की विशेषताओं को सभ्यता की सड़कें, नालियों की व्यवस्था, पकी ईंटों के प्रयोग एवं महत्वपूर्ण भवनों के रूप में देखा जा सकता है. इन विशेषताओं से ही हमें हड़प्पा वासियों की उन्नत वास्तुकला के साक्ष्य प्राप्त होते है.

सड़कें

1. सभ्यता की सड़के विशेष रूप से उल्लेखनीय है. मुख्य सड़क काफी चौड़ी होती थी. मोहनजोदड़ो में मुख्य सड़क 33 फीट तक चौड़ी मिलती है. गलियों की सड़कें भी कम चौड़ी नहीं थी.

2. सड़कें सीधी, एक दुसरे को समकोण पर कटती हुई. नगर को अनेक खंडों में विभाजित करती थी. प्रत्येक खंड में भवन बने होते थे.

हड़प्पा सभ्यता की सड़कों के लिए सांकेतिक चित्र

3. सड़कें कच्ची थी. ये मिटटी की बनी थी किन्तु इनकी सफाई की अच्छी व्यवस्था थी. कूड़ा -करकट एकत्रित करने के लिए स्थान-स्थान पर गड्ढ़े खोदे जाते थे अथवा कूड़ा पात्र रखे जाते थे.